हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 9 | अंक 24 | अगस्त 2017 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रवृत्ति–2017

कुमारी भावना भगलू कला व संस्कृति मंत्री रूपन तथा सभा के प्रधान के हाथों प्राप्त कर रही प्रमाण पत्र तथा "हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रवृत्ति" प्रपत्र ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के इतिहास में यह एक नया मोड़ है, एक नया कदम उठाया गया । छात्रों के प्रोत्साहन के लिए उत्तमा–साहित्य रत्न की परीक्षा के प्रथम विजेता को पहली बार के लिए इस वर्ष से हिंदी भाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई । सभा की नियमावली के अनुसार इस वर्ष छात्रा भावना भगलू जो क्लेरफ़ों, वाक्वा रहती हैं, उन्हें यह छात्रवृत्ति प्रदप्त है । सभा की ओर से उनको बधाई है तथा भविष्य के लिए हम उन्हें शुभकामना प्रदान करते हैं । इस वर्ष से यह छात्रा स्नातकीय स्तर की शिक्षा प्राप्त करने हेतु महात्मा गांधी संस्थान में दाखिला पा चुकी है और उनकी शिक्षा भी आरम्भ हो चुकी है । इस तरह हर वर्ष किसी एक छात्र व छात्रा को "हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रवृत्ति" प्रदान की जाएगी तथा सभा इसका खर्च वहन करेगी । यह सभा के लिए बड़े गर्व की बात है कि बिना सरकारी अनुदान पाए छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सभा ने ऐसा कदम उठाया है । हम उन दाताओं के प्रति नतमस्तक हैं जिन्होंने भाषा–प्रचार के लिए अपनी सम्पत्ति, अपना धन–दौलत सभा के नाम सौंप दिया ।

यंतुदेव बुधु
प्रधान

हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस एवं कवि सम्मेलन

छात्र मोती गोष्ठी का संचालन करते हुए साथ में बैठे देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर तथा मंत्री श्री धनराज शम्भु ।

ता. 17 जून को हिंदी प्रचारिणी सभा का 91वाँ स्थापना दिवस भव्य रूप से मनाया गया । इस उत्सव के उपलक्ष्य में दो कार्यक्रम रखे गए, प्रथम साहित्यिक गोष्ठी तथा द्वितीय कार्यक्रम था कवि सम्मेलन । सुबह में साहित्यिक गोष्ठी हुई जो हिंदी भवन के छात्रों द्वारा सम्पन्न हुआ । इस बार साहित्यकार श्री धनराज शम्भु पर गोष्ठी हुई जिसमें मुख्य वक्ता देश के वरिष्ठ व विख्यात साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर रहे । कार्यक्रम की प्रस्तुति छात्र मोती ने की । बारी–बारी से कई छात्रों ने अपनी–अपनी तैयारियाँ प्रस्तुत कीं । छात्रों को सुनने के पश्चात धुरंधरजी ने शम्भु जी तथा उनकी कृतियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जिससे छात्र काफ़ी लाभांवित हुए ।

बाएँ से –डॉ. पवन अग्रवाल, डॉ. विनोद कुमार मिश्र, श्री यंतुदेव बुधु, डॉ. नूतन पांडे, डॉ. विनय गुदारी तथा श्री धनराज शम्भु ।

दूसरा कार्यक्रम अपराह्न में कवि–सम्मेलन रहा जो 12.30 बजे आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. विनोद कुमार मिश्र कर रहे थे । मुख्य अतिथि डॉ. नूतन पांडे थीं । भारत से आए हुए डॉ. पवन अग्रवाल ने भी इस कवि सम्मेलन में भाग लिया । कवि–सम्मेलन का संचालन डॉ. विनय गुदारी कर रहे थे । कवि–सम्मेलन में देश के कई कवियों ने भाग लिया। ✦

..... पिछले अंक का शेष भाग " साभार – राष्ट्रभाषा सन्देश "

हिंदी की सम्भावनाएँ ।

हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए हालैण्ड के लाइडेन विश्वविद्यालय में हिंदी में पी.एच.डी. की विशेष सुविधा उपलब्ध है । अमेरिका के 69 विश्वविद्यालयों में, रूस के10 विश्वविद्यालयों, चीन के पेइचिंग विश्वविद्यालय और आका–शवाणी में हिंदी का बोलबाला है ।

मालद्वीप की भाषा भी हिंदी के बहुत नज़दीक है और रूमानिया की भाषा भी । थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, बाली, इण्डोनेशिया इत्यादि में बहुत से लोग हिंदी बोलते हैं । पाकिस्तान के कराची विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई ज़ोर–शोर से हो रही है । बी.बी.सी. लन्दन द्वारा निरन्तर हिंदी का प्रसारण होता रहा है । यहाँ तक कि इस्लामी राष्ट्रों; जैसे तुर्की, इराक, मिश्र, लीबिया, अरब अमीरात, दुबई, अफगानिस्तान उजबेकिस्तान तथा मध्य एशिया के राष्ट्रों में हिंदी की स्थिति अच्छी है । वैश्विक स्तर पर हिंदी ने विश्वभाषा बनने का मार्ग तो प्रशस्त किया है, पर विज्ञान, अनुसंधान और तकनीकी क्षेत्र में काफ़ी पिछड़ी है, जो विश्वभाषा बनने में सबसे बड़ा बाधक है ।

भारत ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर साहित्य–लेखन, कार्यशाला, पत्र–पत्रि–काओं, फिल्म, मीडिया एवं सम्मेलन के द्वारा हिंदी की उन्नति के सशक्त सकारात्मक पहलू है । तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के विकास होने पर जल्द ही राष्ट्रभाषा विश्वभाषा बन जाएगी । सूचना–प्रौद्योगिकी अमूल्य देन कम्प्यूटर व इण्टरनेट के माध्यम से अन्यान्य देशों के लोगों के बीच की दूरियाँ सिकुड़ती जा रही है ।

भारत के दक्षिण प्रान्तों में हिंदी का थोड़ा–सा विरोध है । सम्भवतः इसका मूल कारण है हिंदी का ठीक प्रकार से न जानना । इस ओर कारगर प्रयास करके हिंदी–शिक्षण नाम से एक सीडी बनाई गई है । इस सीडी के माध्यम से घर में बैठकर बिना किसी संकोच के मन चाहे समय में हिंदी सीखी जा सकती है । इस सीडी के माध्यम से अहिंदी भाषी प्रान्तों में लाखों की संख्या में अप्रशि–क्षित कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित करने, पत्राचार आदि के लिए प्रयोग हेतु कार्यक्रम आदि तैयार करने आदि के लिए निश्चित रूप से सहायता मिलेगी ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में केवल हिंदी में भाषण देने से काम नहीं चलेगा । अतः इस वैश्वीकरण के इस दौर में हमें विश्व के साथ कदम–से–कदम मिलाकर चलना है और उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना है । अतः अब समय आ गया है कि हम इस बारे में गम्भीरता से सोचें, मनन करें और इस ओर पूरी निष्ठा से जुट जाएँ । ऐसे व्यक्तियों तथा संस्थाओं को न सिर्फ प्रोत्साहन करें बल्कि उन्हें इस क्षेत्र में खुली छूट से कार्य करने का अवसर भी सुलभ कराएँ ।

आज विश्व का ऐसा कोई राष्ट्र नहीं है, जिसकी सरकार का कार्य उसकी अपनी भाषा में न होता हो । केवल भारत ही ऐसा देश है, जो संविधानसम्मत भाषा की अवहेलना करके गुलामी की प्रतीक विदेशी भाषा के बोझ को ढो रहा है । अंग्रेज़ी भक्तों ने इस देश के नागरिकों के मस्तिष्क में यह बात बैठा दी है कि बिना अंग्रेज़ी के यह देश उन्नति नहीं कर सकता । भला उनसे कोई पूछे कि रूस, जापान, कोरिया, हालैण्ड, डेनमार्क, फ्रांस, पुर्तगाल, इज़राइल, टर्की, सउदी अरब के विकास में अंग्रेज़ी का क्या योगदान है ? यदि अपनी भाषा की शक्ति को पहचानने और उसे रोज़गार से जोड़कर उसमें काम करने की आदत डालें, तो देश की अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा । हिंदी से अधिक मनोवैज्ञानिक और सरल भाषा विश्व में दूसरी कोई भाषा नहीं है । तमाम चुनौतियों के बावजूद आज हिंदी विकास को नए आयाम प्रदान कर रही है । आज हिंदी केवल साहित्य, बाज़ार, विपणन एवं वाणिज्य, मीडिया, जनसंचार, विज्ञापन, फिल्म, शोध और अनुसंधान एवं प्रबन्धन आदि कई क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है । वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हिंदी के व्यापक प्रयोग की सम्भावनाएँ खोल दी है । बाज़ारवाद में हिंदी की बढ़ती हुई लोकप्रियता आज के विकास में हिंदी की बढ़ती हुई लोकप्रियता आज केविकास में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वयमेव स्पष्ट करती है ।

हिंदी सम्पर्क–भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, शिक्षण–भाषा, प्रशिक्षण–भाषा, देह या आंगिक चेष्टाओं की भाषा, संचार–संप्रेषण की भाषा, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल की भाषा,एस.एम.एस की भाषा सम्भाषण की भाषा, अभिव्यक्ति की भाषा,विज्ञापनों की भाषा खेल की भाषा हिंदी होनी चाहिए । व्यापार और संस्कार की भाषा हिंदी हो । इस दिशा में देश के सभी विद्यालयों को शुद्ध संकल्प लेकर जुटना होगा और समर्पित होना होगा ।

डॉ. प्रदीपकुमार सिंह
अध्यक्ष – साठ्ये महाविद्यालय
मुम्बई – भारत

कविता–वाचन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार विजेता प्रिशनी पोराह

प्रति वर्ष सभा माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए कविता–वाचन प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर करती है । यह प्रति–योगिता परिचय व प्रथमा तथा फोर्म II व फोर्म III के छात्रों के लिए निर्धारित होता है । सभा द्वारा आयोजित वर्ष 2017 की कविता–वाचन प्रतियोगिता का प्रथम चरण ता. 13 मई को देश के तीन केंद्रों में सम्पन्न हुआ । इस वर्ष 70 से अधिक छात्रों ने भाग लिया । प्रतियोगिता के अंतिम चरण का आयोजन हिंदी भवन में ता. 10 जून को हुआ जिस के लिए 20 प्रतियोगियों को चुना गया था । पुरस्कृत करने के लिए 10 श्रेष्ठ छात्रों को चुना गया जिनमें प्रथम स्थान पर प्रिशनी पोराह, दूसरे स्थान पर लविश कुन्जबिहारी तथा तीसरे स्थान पर चेली दोबी आई । हिंदी दिवस के अवसर पर ता. 12 अगस्त को विजेता–ओं को पुरस्कृत किया गया ।

कार्यशाला – उत्तमा (साहित्य रत्न) 2017

शुक्रवार ता. 4 अगस्त को हिंदी भवन–लोंग माउंटेन में उत्तमा साहित्य रत्न के छात्रों के निमित्त एक एकदिवसीय कार्यशाला का आयो–जन हुआ जिसमें 50 से अधिक छात्रों ने भाग लिया । कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य था परीक्षा के लिए छात्रों का सही मार्गदर्शन करना । कार्यशाला में पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र तथा प्रश्नों के उत्तर देने के तरीके पर जानकारियाँ दी गईं । श्री यंतुदेव बुधु ने हिंदी और प्रौद्योगिकी पर बात की । श्री धनराज शम्भु ने पाठ्यक्रम तथा प्रश्न पत्र पर अपना विचार दिया । श्रीमती मालती ओकल ने संस्कृत के भविष्य पर एक सुन्दर प्रस्तुति की । श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी ने भाषा और व्याकरण के तत्त्वों पर जानकारियाँ दीं । डॉ. जयचन्द लालबिहारी ने पद्य की व्याख्या पर बल दिया तथा अंत में श्री टहल रामदीन ने निबन्ध–लेखन पर छात्रों का मार्गदर्शन किया ।

बड़ौदा–भारत के विद्वानों का हिंदी भवन में स्वागत

भारतीय विद्वानों के साथ हिंदी प्रचारिणी सभा के कार्यकारिणी समिति के सदस्य

ता. 20 मई को भारत के गुजरात प्रांत–बड़ौदा से दस विद्वान मॉरीशस के विख्यात साहित्यकार श्री राज हीरामन के साथ हिंदी भवन पधारे। उन विद्वत जनों का सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में स्वागत किया गया। जो भी हिंदी भाषा के विद्वान आते हैं, वे हिंदी प्रचारिणी सभा का दौरा किए बिना मॉरीशस से लौटते नहीं हैं।

बड़ौदा के प्रतिनिधि मंडल की अध्यक्षा डॉ. श्रीमती शोभना जैन को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए सभा के सदस्य श्री हनुमान दुबे गिरधारी।

हिंदी प्रचारिणी सभा के इतिहास की जानकारी पाकर बड़ौदा के विद्वान अति प्रसन्न तथा आश्चर्य भी हुए। डॉ. श्रीमती शोभना जैन जो इस मंडल का प्रतिनिधित्व कर रही थी सभा के पुस्तकालय में हस्तलिखित दुर्गा पत्रिका देखकर काफ़ी प्रभावित हुई। उन्होंने कहा कि यह तो सभा की अमूल्य धरोहर है जिन्हें सम्भालकर रखना चाहिए। अपने भाषण में उन्होंने सभा को हिंदी का एक तीर्थ स्थान बताया।

उन्होंने यहाँ दो–तीन घंटे बिताए, कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के साथ विचारों का आदान–प्रदान हुआ तथा दोपहर में उनके साथ एक सहभोज का भी आयोजन हिंदी भवन में हुआ। ✦

2016 की सम्मेलन–परीक्षाओं के आँकड़े तथा नतीजे

परीक्षा	सम्मिलित	सफल	सफलता की दर
परिचय	546	441	81 %
प्रथमा	363	354	98 %
मध्यमा	224	217	97 %
उत्तमा प्रथम	193	188	97 %
उत्तमा द्वितीय	163	162	99 %
उत्तमा तृतीय	144	135	94 %

प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों के नाम

कक्षा	स्थान	नाम		गाँव / शहर
परिचय				
	1.	लेखा	बुतन	कात्र बोर्न
	2.	देविशी	सुकर	वाक्वा
	3.	मीता	रघुनन्दन	काँ दे मास्क पावे
	4.	गीतिका	नवरतन	त्रिओले
	5.	हुशिका	रामलाल	मोंताई ब्लाँश
	6.	मेधा	बेचू	न्यू ग्रोव
	7.	होनिष्ता	बैजनाथ	पेचित रिव्येर
	8.	भेवना देवी	पोचवा	प्रोविदाँस
	9.	लक्षणा	ओबिलक	फ़ेनिक्स
	10.	वैश्नवी	भिखन	पेचित राफ़रे
प्रथमा				
	1.	लविश कुमार	रामजुमन	मोंताई ब्लाँश
	2.	सुनन्दा	दरमदर	सेंट्रल फ्लाक
	3.	चन्द्रशेखर	सुगुन	मोंताई ब्लाँश
	4.	जितेस	खेलावन	ग्राँ साब
	5.	लविना	घरभरन	वाक्वा
	6.	लेसविन	नवरतन	त्रिओले
	7.	हिरदर्शी	जल्लू	काँ दे मास
	8.	लवना देवी	रामदेवर	मोर्सल्माँ सेंतान्द्रे
	9.	अभिषेक	सोतचर्ण	देपिने
	10.	बिनाती	धानी	सें ज़ुलिएँ दोत्माँ
मध्यमा				
	1.	परमरशा	जगारू	सेबासतोपोल
	2.	प्रज्ञा वैदेही	ठाकुर	लालमाटी
	3.	क्षितिज प्रभाकर	मोतिया	गुड लेंड्स
	4.	तेजस्विना	सोहर	लेसपेराँस त्रेबुशे
	5.	तुषिता देवी	दुछुआ	क्वीन विक्टोरिया
	6.	भारती	दुहोनारायण	कात्र कोको
	6.	चन्द्रिका	दुबोरी	गुड लेंड्स
	8.	हिमांसी	नेमचन्द	रोस बेल
	9.	आशा	निर्मल	दागोच्यिर
	10.	प्रियाशा	सुकारा	ब्रिज़े वेरजियेर
उत्तमा (साहित्य रत्न)				
	1.	यवनेश	लछमन	कोतेज
	2.	परमिता शर्मा	सिगुलाम	लोंग माउंटेन
	3.	प्रेशथा	बाबुआ	ब्वा दे आमुरेत
	4.	रोशिना	गणेशसिंह	कात्र बोर्न
	5.	दर्शिनी	बिजमोहन	कारचिये मिलितेर
	6.	मामता	नकछेदी	मार ला शो
	7.	तुष्टि	राहनाथ	फेनिक्स
	8.	मोक्षदा	मुघु	लेसकालिए
	9.	प्रियंका	खेदू	प्लेन मानयाँ
	10.	सुदक्षना	भरतन	त्रिओले

हिंदी दिवस 2017

तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर ता. 12 अगस्त को हिंदी भवन–लोंग माउंटेन में प्रो. उमेश कुमार सिंह जी (आई,सी.सी.आर हिंदी चेयर) की अध्यक्षता में भव्य रूप से हिंदी दिवस मनाया गया । उत्सव के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में मान. पृथ्वीराजसिंह रूपन उपस्थित रहे तथा मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम श्री अभय ठाकुर का प्रतिनिधित्व डॉ. श्रीमती नूतन पांडे कर रही थीं । विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र ने भी उत्सव में भाग लिया । उस अवसर पर अन्य कई गणमान्य अतिथि, महात्मा गांधी संस्थान के व्याखाता, हिंदी प्रेमी, शिक्षक, छात्र एवं अभिभावक उपस्थित रहे ।

उत्सव का श्रीगणेश दीप प्रज्वलन से आरम्भ हुआ । इसके पश्चात कुमारी खुशी झोरी ने सरस्वती वन्दना पर आधारित एक बहुत ही सुन्दर नृत्य की प्रस्तुति की । फिर प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने अपने स्वागत भाषण में अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी दिवस मनाने के उद्देश्य पर बात की । सभा के प्रधान ने यह भी घोषणा की कि इस वर्ष से उत्तमा–साहित्य रत्न के एक छात्र को हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु "हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रवृत्ति" दी जा रही है । इस वर्ष यह छात्रवृत्ति कुमारी भावना भगलू को प्राप्त हुई । सभा द्वारा प्रकाशित पंकज विशेषांक पत्रिका का भी विमोचन हुआ तथा अब से पंकज पत्रिका ऑन लाइन भी कर दिया गया और यह शुभ कार्य इसी अवसर पर सकुशल सम्पन्न हुआ । 1935 में लिखी गई हस्तलिखित पत्रिका के प्रथम अंक को पुनर्प्रकाशित कर इसी अवसर पर विमोचन किया गया । साथ में श्री धनराज शम्भु जी का "अस्मिता" नामक कहानी संग्रह का भी विमोचन हुआ । कविता–वाचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कुमारी प्रिशनी पोराहू ने अपनी कविता प्रस्तुत की ।

उत्सव के अध्यक्ष प्रो. उमेश कुमार सिंह जी ने अपने वक्तव्य में तुलसीदास द्वारा रचित ग्रन्थ के मानव मूल्यों पर ज़ोर दिया तथा हिंदी भाषा को पीढ़ी–दर–पीढ़ी तक पहुँचाने की बात की । विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र ने बीते कल, आज और आनेवाले कल की बात की । उनका कहना था कि सभागार में विराजमान लोगों मे वृद्ध, अधेड़ और जवान लोग भी हैं । यहीं कल, आज और कल के लोग हैं जिन्हें हिंदी भाषा को ले चलना है । डॉ. श्रीमती नूतन पांडे ने हिंदी दिवस मनाने के उद्देश्यों पर बात की तथा दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका के पुनर्प्रकाशन पर सभा को बधाई दी । अंत में माननीय पृथ्वीराजसिंह रूपन कला व संस्कृति मंत्री जी ने लोगों को हिंदी में संबोधित किया । उन्होंने छात्रों को बधाई दी तथा हिंदी भाषा को पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित किया । मंत्री जी ने "दुर्गा" पत्रिका के संरक्षण के लिए कला एवं संस्कृति मंत्रालय से सहयोग मिलने की भी बात की ।

प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरण के बाद शांति–पाठ से उत्सव सकुशल सम्पन्न हुआ । ✦

हिंदी दिवस के अवसर पर लिए गए चित्र